

आधुनिक भारतीय हिंदी लेखकों के चयनित साहित्य में गरीबी और निम्नवर्गीय परिवारों का चित्रण

डॉ. अपराजिता शांडिल्य

असिस्टेंट प्रोफेसर (संविदा), वसंता कॉलेज फॉर विमेन, राजघाट, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय

E-mail: aparajita@outlook.com

सार

भारतीय हिंदी साहित्य में गरीबी और निम्नवर्गीय परिवारों का चित्रण सामाजिक यथार्थवाद का केंद्रीय तत्व रहा है। प्रेमचंद से लेकर समकालीन लेखकों तक, साहित्यकारों ने दलित, किसान, मजदूर और वंचित वर्गों की पीड़ा को गहन संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य आधुनिक हिंदी साहित्य में गरीबी के साहित्यिक चित्रण और निम्नवर्गीय परिवारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। प्रेमचंद के रचना संसार, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों और समकालीन उपन्यासों का साहित्यिक विश्लेषण किया गया है। परिणाम दर्शाते हैं कि हिंदी साहित्य में गरीबी केवल आर्थिक अभाव तक सीमित नहीं है बल्कि यह जमींदारी शोषण, जातिगत भेदभाव, कृषि संकट और मजदूर उत्पीड़न का व्यापक चित्रण प्रस्तुत करती है। समकालीन साहित्य में कृषि संकट और २१वीं सदी के उपन्यासों में मजदूर वर्ग का यथार्थपरक अंकन मिलता है। निष्कर्षतः हिंदी साहित्य निम्नवर्गीय परिवारों की वास्तविकता को प्रामाणिकता से अभिव्यक्त करता है।

मुख्य शब्द: गरीबी, निम्नवर्गीय परिवार, हिंदी साहित्य, सामाजिक यथार्थवाद, साहित्यिक चित्रण

1. प्रस्तावना

भारतीय समाज में वर्गीय विभाजन और आर्थिक विषमता का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। हिंदी साहित्य ने इस सामाजिक यथार्थ को विभिन्न कालखंडों में अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्यिक रूप प्रदान किया है।



प्रेमचंद युग से लेकर समकालीन काल तक, हिंदी साहित्यकारों ने गरीबी को केवल आर्थिक अभाव के रूप में नहीं अपितु सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक संदर्भ में चित्रित किया है। साहित्यिक अभिव्यक्ति के माध्यम से निम्नवर्गीय परिवारों की जीवन परिस्थितियों, संघर्षों और आकांक्षाओं को मूर्त रूप दिया गया है। हिंदी साहित्य में गरीबी का चित्रण मात्र वर्णनात्मक नहीं है बल्कि यह सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों और शोषणकारी संरचनाओं की आलोचना भी प्रस्तुत करता है। प्रेमचंद के साहित्य में ग्रामीण भारत की गरीबी, किसानों की विपन्नता, जमींदारी प्रथा का उत्पीड़न और वर्ग संघर्ष प्रमुख साहित्यिक विषय रहे हैं। शर्मा के अनुसार, प्रेमचंद के युग में भारतीय समाज में व्याप्त गरीबी, जमींदारी शोषण और किसानों की दुर्दशा उनके साहित्य का मूल स्वर था। उस दौर में कृषक समुदाय न केवल आर्थिक शोषण का शिकार था बल्कि सामाजिक अपमान और मानवीय गरिमा के हनन का भी सामना करता था। प्रेमचंद की रचनाओं में निम्नवर्गीय पात्रों की मानसिक पीड़ा, सामाजिक अन्याय के प्रति विद्रोह और जीवन संघर्ष का सजीव अंकन मिलता है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में गरीबी का स्वरूप और अधिक जटिल हो गया। स्वतंत्रता के पश्चात भी ग्रामीण भारत की आर्थिक दशा में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ। कुमार के शोध में यह स्पष्ट होता है कि स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में ग्राम जीवन और संस्कृति का चित्रण अधिक यथार्थवादी हो गया। साहित्यकारों ने ग्रामीण समाज की नई समस्याओं - भूमि सुधार की असफलता, कृषि उत्पादन में गिरावट, ग्रामीण बेरोजगारी और शहरों की ओर पलायन - को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। शहरीकरण और औद्योगीकरण ने नए प्रकार की गरीबी को जन्म दिया जिसमें मजदूर वर्ग का शोषण, शहरी झुग्गी बस्तियों की त्रासदी और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की विपन्नता प्रमुख है। समकालीन हिंदी साहित्य में गरीबी के नए आयाम उभरे हैं। देवी के अध्ययन के अनुसार, २१वीं सदी के साहित्य में कृषि संकट, किसान आत्महत्या, वैश्वीकरण के प्रभाव और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विघटन का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। शर्मा ने अपने शोध में यह प्रतिपादित किया है कि समकालीन हिंदी उपन्यासों में मजदूर वर्ग की समस्याओं - ठेका मजदूरी, असंगठित क्षेत्र में शोषण, सामाजिक सुरक्षा का अभाव - का व्यापक साहित्यिक चित्रण हुआ है। इस प्रकार हिंदी साहित्य में गरीबी का चित्रण समय के साथ विकसित हुआ है और इसने समाज के विभिन्न वर्गों की पीड़ा को संवेदनशीलता से अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य आधुनिक हिंदी साहित्य में गरीबी और निम्नवर्गीय परिवारों के चित्रण का व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

2. साहित्य समीक्षा

हिंदी साहित्य में गरीबी और निम्नवर्गीय परिवारों के चित्रण पर व्यापक शोध कार्य हुआ है। विभिन्न विद्वानों ने इस विषय के विविध पहलुओं पर महत्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। प्रेमचंद के साहित्य को हिंदी साहित्य में यथार्थवाद का आधार स्तंभ माना जाता है। गुप्ता ने प्रेमचंद के रचना संसार का पुनर्मूल्यांकन करते हुए यह स्थापित किया है कि प्रेमचंद के साहित्य में गरीबी केवल पृष्ठभूमि नहीं अपितु कथानक का केंद्रीय तत्व है जो पात्रों के जीवन, चरित्र और निर्णयों को मूलभूत रूप से प्रभावित करता है [2]। तिरुपतम्मा ने प्रेमचंद की कहानियों में गरीबी की परिकल्पना का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। उनके शोध में यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद ने गरीबी को केवल आर्थिक समस्या के रूप में नहीं बल्कि सामाजिक विकृति और व्यवस्थागत शोषण के परिणाम के रूप में चित्रित किया है [9]। शर्मा ने प्रेमचंद और उनके युग का विस्तृत विश्लेषण किया है। उनके अनुसार, प्रेमचंद के समय में भारतीय समाज में व्याप्त गरीबी का मूल कारण जमींदारी प्रथा, साहूकारी शोषण और सामंती व्यवस्था थी [10]। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में इन शोषणकारी संरचनाओं की कड़ी आलोचना प्रस्तुत की और निम्नवर्गीय पात्रों की मानवीय गरिमा को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की [11]। सिंह ने आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हुए यह प्रतिपादित किया है कि हिंदी साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद की प्रवृत्ति अत्यंत प्रबल रही है। साहित्यकारों ने समाज के विभिन्न वर्गों विशेषतः निम्न और मध्यम वर्ग की समस्याओं को प्रमुखता से चित्रित किया है [12,13,14]।

स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में ग्रामीण जीवन का चित्रण

कुमार ने स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में ग्राम जीवन और संस्कृति का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है। उनके शोध में यह उद्घाटित होता है कि स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी कहानियों में ग्रामीण गरीबी का चित्रण अधिक यथार्थपरक और जटिल हो गया [4]। स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में ग्रामीण समाज की नई समस्याओं - भूमि सुधार की असफलता, कृषि संकट और ग्रामीण बेरोजगारी - का सजीव अंकन मिलता है [5,6]। कुमार के अनुसार, हिंदी कहानियों में ग्रामीण संस्कृति के विविध पहलुओं के साथ निम्नवर्गीय परिवारों की सामाजिक और आर्थिक विपन्नता का प्रामाणिक चित्रण हुआ है [7]। धूमकेतु के संपादन में प्रकाशित किसान विशेषांक में कृषक समुदाय की विशिष्ट समस्याओं को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की गई है [3]।

समकालीन साहित्य में नए आयाम

देवी ने समकालीन साहित्य में कृषि और ग्रामीण जीवन के चित्रण पर महत्वपूर्ण शोध प्रस्तुत किया है। उनके अध्ययन के अनुसार, २१वीं सदी के हिंदी साहित्य में किसान संकट, कृषि अर्थव्यवस्था का विघटन, किसान आत्महत्या और ग्रामीण पलायन जैसे नए विषय उभरे हैं [1]। शर्मा ने २१वीं सदी के प्रमुख हिंदी उपन्यासों में मजदूर वर्ग के चित्रण का विस्तृत विश्लेषण किया है। उनके शोध में यह स्पष्ट होता है कि समकालीन उपन्यासों में शहरी गरीबी, मजदूर शोषण, ठेका मजदूरी की समस्या और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की विपन्नता का यथार्थपरक चित्रण मिलता है [8]। इस प्रकार साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी साहित्य में गरीबी और निम्नवर्गीय परिवारों का चित्रण एक सतत विकासशील प्रक्रिया रही है जो समय के साथ नए आयाम ग्रहण करती रही है।

3. शोध के उद्देश्य

1. आधुनिक हिंदी साहित्य में गरीबी के साहित्यिक चित्रण का विश्लेषण करना।
2. निम्नवर्गीय परिवारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के साहित्यिक प्रस्तुतीकरण का अध्ययन करना।

4. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। यह अध्ययन गुणात्मक प्रकृति का है जो साहित्यिक पाठों के गहन विश्लेषण पर आधारित है। शोध का मुख्य केंद्र आधुनिक हिंदी साहित्य विशेषतः प्रेमचंद युग से लेकर समकालीन काल तक के चयनित साहित्यिक कृतियों में गरीबी और निम्नवर्गीय परिवारों का चित्रण है। शोध सामग्री के संग्रहण में पुस्तकालय अध्ययन विधि का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत के रूप में प्रेमचंद के उपन्यास और कहानी संग्रह, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियां और समकालीन उपन्यासों को शामिल किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में विभिन्न शोध पत्र, आलोचनात्मक ग्रंथ, साहित्यिक पत्रिकाओं के विशेषांक और साहित्यिक समीक्षाएं सम्मिलित हैं। साहित्यिक पाठों का विश्लेषण करते समय पाठ विश्लेषण तकनीक का उपयोग किया गया है। चयनित साहित्यिक कृतियों में गरीबी के विभिन्न आयामों की पहचान की गई है और उनका तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

शोध में विषय वस्तु विश्लेषण पद्धति का भी प्रयोग किया गया है जिसमें साहित्यिक रचनाओं में निम्नवर्गीय परिवारों के चित्रण के विविध पहलुओं को वर्गीकृत और विश्लेषित किया गया है।

5. परिणाम

प्रेमचंद युगीन साहित्य में गरीबी का साहित्यिक अंकन

प्रेमचंद के साहित्य में गरीबी और निम्नवर्गीय परिवारों का चित्रण हिंदी साहित्य में यथार्थवाद की आधारशिला है। गुप्ता के अनुसार, प्रेमचंद के रचना संसार में गरीबी केवल पृष्ठभूमि नहीं अपितु कथानक का मूल तत्व है जो पात्रों के समस्त जीवन को प्रभावित करता है [2]। प्रेमचंद की रचनाओं में ग्रामीण भारत के किसान परिवारों की विपन्नता, जमींदारों द्वारा शोषण, साहूकारों का उत्पीड़न और सामंती व्यवस्था की क्रूरता का सजीव अंकन मिलता है। शर्मा ने प्रतिपादित किया है कि प्रेमचंद के युग में जमींदारी प्रथा और साहूकारी शोषण गरीबी के प्रमुख कारण थे [10]। प्रेमचंद के पात्र आर्थिक विपन्नता के साथ सामाजिक अपमान और मानवीय गरिमा के हनन का भी सामना करते हैं। तिरुपतम्मा के शोध में यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद ने गरीबी को सामाजिक विकृति के रूप में चित्रित किया है [9]। प्रेमचंद के साहित्य में निम्नवर्गीय पात्र केवल दया के पात्र नहीं हैं बल्कि उनमें जीवटता, संघर्षशीलता और सामाजिक अन्याय के प्रति विद्रोह का भाव भी विद्यमान है।

स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में ग्रामीण गरीबी का परिवर्तित स्वरूप

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हिंदी कहानियों में ग्रामीण गरीबी का चित्रण अधिक यथार्थपरक और जटिल हो गया। कुमार के शोध के अनुसार, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में ग्राम जीवन और संस्कृति का चित्रण नई समस्याओं को समेटे हुए है [4,5]। स्वतंत्रता के बाद भी ग्रामीण समाज में आर्थिक विषमता बनी रही बल्कि कुछ नए संकट उभरे। भूमि सुधार कार्यक्रमों की असफलता, कृषि उत्पादन में गिरावट और ग्रामीण बेरोजगारी ने गरीबी को और गहरा कर दिया [6]। धूमकेतु के संपादित किसान विशेषांक में कृषक समुदाय की विशिष्ट समस्याओं का साहित्यिक प्रस्तुतीकरण मिलता है [3]। स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में ग्रामीण परिवारों की आर्थिक तंगी के साथ शिक्षा से वंचना, स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव और सामाजिक भेदभाव का भी

चित्रण हुआ है। कुमार ने यह स्थापित किया है कि हिंदी कहानियों में ग्रामीण संस्कृति और परंपरा के साथ निम्नवर्गीय परिवारों की विपन्नता का संतुलित चित्रण मिलता है [7]।

समकालीन साहित्य में कृषि संकट और किसान विपन्नता

देवी के शोध के अनुसार, समकालीन साहित्य में कृषि और ग्रामीण जीवन का चित्रण नए संदर्भों में किया गया है [1]। २१वीं सदी के हिंदी साहित्य में किसान संकट, कृषि अर्थव्यवस्था का पतन और किसान आत्महत्या जैसे गंभीर विषयों को साहित्यिक अभिव्यक्ति मिली है। वैश्वीकरण, बाजारीकरण और कॉर्पोरेट कृषि के प्रभाव ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को विघटित कर दिया है। समकालीन साहित्य में विदर्भ और बुंदेलखंड के किसानों की त्रासदी का मार्मिक चित्रण मिलता है। कृषि में लगातार घाटा, बीज-उर्वरक की बढ़ती कीमतें, प्राकृतिक आपदाएं और सरकारी उपेक्षा ने किसान परिवारों को चरम विपन्नता की ओर धकेला है। ग्रामीण युवाओं का शहरों की ओर पलायन और कृषि का पारंपरिक व्यवसाय से परित्याग भी समकालीन साहित्य में चित्रित हुआ है।

२१वीं सदी के उपन्यासों में मजदूर वर्ग का चित्रण

शर्मा के शोध में यह स्पष्ट होता है कि २१वीं सदी के प्रमुख हिंदी उपन्यासों में मजदूर वर्ग का व्यापक चित्रण हुआ है [8]। समकालीन साहित्य में शहरी गरीबी, मजदूर शोषण और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की समस्याओं को यथार्थपरक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। निर्माण मजदूर, कारखाना श्रमिक, घरेलू कामगार और अन्य असंगठित क्षेत्र के मजदूरों की विपन्नता का साहित्यिक अंकन मिलता है। ठेका मजदूरी की समस्या, सामाजिक सुरक्षा का अभाव, श्रम कानूनों की अवहेलना और अमानवीय कार्य परिस्थितियां समकालीन उपन्यासों में चित्रित हुई हैं। झुग्गी-झोपड़ियों में निवास करने वाले मजदूर परिवारों की दैनिक संघर्ष, बाल मजदूरी और स्त्री शोषण जैसे मुद्दों को संवेदनशीलता से उठाया गया है।

आधुनिक साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद की प्रवृत्ति

सिंह ने प्रतिपादित किया है कि आधुनिक हिंदी साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद की प्रवृत्ति अत्यंत प्रबल रही है [12,13,14]। हिंदी साहित्यकारों ने समाज के विभिन्न वर्गों विशेषतः निम्न और मध्यम वर्ग की समस्याओं

को प्रमुखता से चित्रित किया है। गरीबी, शोषण, सामाजिक विषमता और आर्थिक अन्याय के विरुद्ध साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत की गई है। आधुनिक साहित्य में निम्नवर्गीय परिवारों की जीवन परिस्थितियों का यथार्थपरक चित्रण के साथ सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा भी व्यक्त हुई है। साहित्यकारों ने गरीबी के लिए जिम्मेदार सामाजिक संरचनाओं और शोषणकारी व्यवस्थाओं की कड़ी आलोचना प्रस्तुत की है।

6. विवेचना

प्रेमचंद युग में गरीबी का साहित्यिक प्रतिनिधित्व

हिंदी साहित्य में गरीबी और निम्नवर्गीय परिवारों के चित्रण का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद युग में गरीबी का साहित्यिक प्रतिनिधित्व अत्यंत व्यापक और बहुआयामी था। शर्मा के अनुसार, प्रेमचंद के युग में गरीबी मुख्यतः जमींदारी शोषण, साहूकारी प्रथा और सामंती व्यवस्था का परिणाम थी [10,11]। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में यह दर्शाया कि गरीब किसान और मजदूर केवल आर्थिक शोषण के शिकार नहीं हैं बल्कि उन्हें सामाजिक अपमान और मानवीय गरिमा के हनन का भी सामना करना पड़ता है। गुप्ता ने प्रेमचंद के रचना संसार का पुनर्मूल्यांकन करते हुए यह स्थापित किया है कि प्रेमचंद के पात्र गरीबी के बावजूद अपनी नैतिक मूल्यों और मानवीय गरिमा को बनाए रखने का प्रयास करते हैं [2]। यह हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण विशेषता है कि निम्नवर्गीय पात्र केवल दया के पात्र नहीं हैं बल्कि उनमें जीवटता, संघर्षशीलता और सामाजिक अन्याय के प्रति विद्रोह भी विद्यमान है। तिरुपतम्मा के शोध में यह उद्घाटित होता है कि प्रेमचंद ने गरीबी को व्यक्तिगत समस्या के रूप में नहीं बल्कि सामाजिक व्यवस्था की विकृति के रूप में चित्रित किया है [9]। उनके साहित्य में गरीबी के लिए जिम्मेदार सामाजिक संरचनाओं की कड़ी आलोचना मिलती है।

स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में परिवर्तित परिप्रेक्ष्य

कुमार के व्यापक शोध से यह स्पष्ट होता है कि स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में ग्राम जीवन और गरीबी का चित्रण अधिक यथार्थपरक और जटिल हो गया [4,5,6,7]। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह आशा थी कि ग्रामीण गरीबी में उल्लेखनीय कमी आएगी परंतु वास्तविकता भिन्न रही। स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में भूमि सुधार कार्यक्रमों की असफलता, कृषि संकट और नई आर्थिक नीतियों के प्रतिकूल प्रभाव का चित्रण मिलता है। धूमकेतु के

संपादित किसान विशेषांक में कृषक समुदाय की समस्याओं को विशेष रूप से साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की गई है [3]। स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में ग्रामीण परिवारों की आर्थिक विपन्नता के साथ शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचना का भी यथार्थपरक चित्रण हुआ है। सिंह के अनुसार, आधुनिक साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद की प्रवृत्ति ने साहित्यकारों को समाज की वास्तविकता को बिना किसी आवरण के प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया [12,13,14]।

समकालीन साहित्य में नवीन आयाम और चुनौतियां

देवी के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि समकालीन साहित्य में कृषि और ग्रामीण जीवन का चित्रण नए संदर्भों और चुनौतियों को समेटे हुए है [1]। २१वीं सदी के साहित्य में वैश्वीकरण, बाजारीकरण और नवउदारवादी नीतियों के प्रभाव से उत्पन्न नई समस्याओं का यथार्थपरक अंकन मिलता है। किसान आत्महत्या, कृषि अर्थव्यवस्था का विघटन और ग्रामीण पलायन जैसे गंभीर विषय समकालीन साहित्य के केंद्र में हैं। शर्मा ने २१वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में मजदूर वर्ग के चित्रण का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है [8]। उनके शोध में यह उद्घाटित होता है कि समकालीन साहित्य में मजदूर शोषण के नए रूप - ठेका मजदूरी, असंगठित क्षेत्र में शोषण, सामाजिक सुरक्षा का अभाव - प्रमुखता से चित्रित हुए हैं। समकालीन साहित्य में शहरी गरीबी का भी व्यापक चित्रण मिलता है जो ग्रामीण गरीबी से भिन्न प्रकृति का है। झुग्गी-झोपड़ियों में निवास करने वाले परिवारों की त्रासदी, बाल मजदूरी और स्त्री शोषण जैसे मुद्दों को संवेदनशीलता से उठाया गया है। इस प्रकार समकालीन साहित्य में गरीबी का चित्रण अधिक जटिल और बहुस्तरीय हो गया है जो वैश्वीकरण के युग में उत्पन्न नई चुनौतियों को प्रतिबिंबित करता है।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी साहित्य में गरीबी और निम्नवर्गीय परिवारों का चित्रण अत्यंत प्रामाणिक, संवेदनशील और बहुआयामी रहा है। प्रेमचंद युग से लेकर समकालीन काल तक हिंदी साहित्यकारों ने गरीबी को केवल आर्थिक समस्या के रूप में नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक संदर्भ में चित्रित किया है। प्रेमचंद के युग में जमींदारी शोषण और सामंती व्यवस्था गरीबी के मुख्य कारण थे जबकि समकालीन साहित्य में वैश्वीकरण, बाजारीकरण और नवउदारवादी नीतियों के

प्रभाव दिखाई देते हैं। स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में ग्रामीण गरीबी का चित्रण अधिक यथार्थपरक हो गया और समकालीन साहित्य में किसान संकट, मजदूर शोषण और शहरी गरीबी जैसे नए विषय प्रमुखता से उभरे हैं। हिंदी साहित्य ने निम्नवर्गीय परिवारों की जीवटता, संघर्षशीलता और सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा को भी साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। यह शोध पत्र इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि हिंदी साहित्य समाज का दर्पण है जो निम्नवर्गीय परिवारों की वास्तविकता को प्रामाणिकता से प्रस्तुत करता है।

संदर्भ

1. देवी ए. समकालीन साहित्य में कृषि और ग्रामीण जीवन. RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. 2019;4(12):122-125. Available from: <https://www.rjournals.com>
2. गुप्ता सुशीला, संपादक. प्रेमचंद का रचना संसार (पुनर्मूल्यांकन). मुम्बई: हिन्दुस्तानी प्रचार सभा प्रकाशन; पृ. 180.
3. धूमकेतु जयप्रकाश, संपादक. अभिनव कदम-27 (किसान विशेषांक-2). 2012 जून-नवम्बर; पृ. 361.
4. कुमार राजेन्द्र. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में ग्राम जीवन और संस्कृति. दिल्ली: परिमल पब्लिकेशंस; 1988. पृ. 118.
5. कुमार राजेन्द्र. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में ग्राम जीवन और संस्कृति (प्रथम संस्करण). दिल्ली: परिमल पब्लिकेशंस; 1988. पृ. 119.
6. कुमार राजेन्द्र. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में ग्राम जीवन और संस्कृति (प्रथम संस्करण). दिल्ली: परिमल पब्लिकेशंस; 1988. पृ. 122.
7. कुमार राजेन्द्र. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में ग्राम जीवन और संस्कृति (प्रथम संस्करण). दिल्ली: परिमल पब्लिकेशंस; 1988. पृ. 236.
8. शर्मा एम एस. २१वीं सदी के प्रमुख हिंदी उपन्यासों में चित्रित मजदूर वर्ग. जूनी ख्यात (Juni Khyat). 2023;13(6):34-41.

9. तिरुपतम्मा पी. प्रेमचंद और रावरि भरद्वाज की कहानियों के परिकल्पना में गरीबी. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिंदी रिसर्च. 2017;3(4):07-12.
10. शर्मा र. प्रेमचंद और उनका युग. राजकमल प्रकाशन; 1993. पृष्ठ 44.
11. शर्मा र. प्रेमचंद और उनका युग. राजकमल प्रकाशन; 1993. पृष्ठ 5, 6.
12. सिंह ना. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ. 1983. पृष्ठ 64.
13. सिंह ना. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ. 1983. पृष्ठ 67.
14. सिंह ना. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ. 1983. पृष्ठ 75.

IJMRR